बुराई पर अच्छाई की जीत का यादगार पर्व है-दशहरा

ब्र. कु. कोमल, शान्तिवन, आबू रोड (राज.) भारत

भारत में मनाये जाने वाले प्रत्येक पर्वों के पीछे किसी ना किसी रूप में मनुष्य का कल्याण समाया होता है। इसके आध्यात्मिक महात्म्य को जानकर मनाना ही इसकी सार्थकता है। इन सभी पर्वो में दशहरा का पर्व अतीत में हुई एक ऐसी घटना की यादगार है जिससे मनुष्य वर्तमान समय इसकी समझ और पराकाष्ठा से अपने जीवन को श्रेष्ठाचारी बनाकर एक संस्कारयुक्त समाज की स्थापना कर सकता है। प्राचीन काल से यह मान्यता है कि राम ने रावण को मारकर सृष्टि को अधर्म के पंजों से छुड़ाकर सतधर्म की स्थापना की थी जिसकी यादगार में हम आज भी रावण का पुतला जलाते है। शास्त्रों, वेदों और पुराणों में यह अच्छी तरह से स्पष्ट है कि विजयादशमी का पर्व बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक माना जाता है। दशहरा अर्थात दश शीश वाले रावण का हनन।

प्राय: रावण के बारे में कहा गया है कि रावण जाति का ब्राह्मण था परन्तु कर्म से राक्षस था। वास्तव में कोई स्वरूप से राक्षस नहीं होता है परन्तु उसके अन्दर पाशविक वृत्ति, दृष्टि और कृत्ति ही उसके आसुरीयता को दर्शाते है। रावण में सबसे बड़ा आसुरी अवगुण अहंकार था। जिससे वह अपने वास्तविकता को नहीं समझ पाने के कारण उसके वशीभूत होकर अपने शक्तियों को अनर्गल कर्मो में लगाया जो उसके विनाश का कारण बनी। रावण के अन्दर अपार भक्ति की पराकाष्ठा थी परन्तु उसमें तमोप्रधानता होने के कारण उससे प्राप्त शक्तियों से प्रकृति और पुरुष की रक्षा करने वाले पांचों तत्वों को भी अपने वश में कर लिया था। रावण के अलंकारी रूपों में उसके दस सिर चित्रित किये गये है। वास्तव में दश सिर का अर्थ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पांच बुराई पुरूष में तथा ईष्या, द्वेश, हठ, आलस्य, घृणा पांच विकार स्त्रियों में पतित कर्मो के आधार के संवाहक माने गये है। रावण के एक हाथ में वेद, पुराण तथा दूसरे हाथ में संहारक हथियार दिखाते है, इसका अर्थ रावण वेद, पुराण शास्त्र आदि कंठस्थ करने के बाद भी हिंसक था। मांस, मदिरा सेवनधारी रावण ने बदला लेने के प्रतिशोध में सीता का हरण किया जिसका खामियाजा उसे स्वयं तथा अपने जाति के समूल नाश के रूप में मिली।

इस कलियुग के तमोप्रधन युग में यह लक्षण अपने चरम सीमा पर पहुँच चुके है। आज श्रीलंका ही नहीं भारत सहित पूरे विश्व में रावण रूपी आसुरी प्रवृत्ति का बोलबाला है। आज हर एक मनुष्य बुराईयों के तपन में झुलस रहा है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की आंधी से आज सभी सीतायें रूपी आत्मायें रावण की कैद में है। शास्त्रों में वर्णित रावण ने तो सिर्फ एक सीता का हरण किया था। परन्तु आज के परिप्रेक्ष्य में लाखों हजारों सीताओं का हरण तो क्या ऐसे कुकृत्य हो रहे है जो रावण के सन्दर्भ में भी नही वर्णित की गयी है। आज चारो तरफ रावण का कद बढ़ रहा है और दम्भ भर रहा है। भक्ति की धूम मची हुई है परन्तु तमोप्रधान होने के कारण फलीभूत नहीं है। मनुष्य मांस, मदिरा एक तरफ सेवन करता है तो दूसरी तरफ भक्ति में लगा हुआ है। भक्ति में भी स्वार्थ समाया हुआ है। रावण को शास्त्रों में लंका में ही दर्शाया गया है परन्तु आज पूरे विश्व में रावण का राज्य है। मनुष्य ने अपने भौतिक शक्तियों से पांचों तत्वों पर भी विजय पाने की कोशिश में लगा हुआ है। धूप, हवा तथा पानी की अनुपस्थिति में भी कृत्रिम रूप से इनकी मौजूदगी उपलब्ध करा रहा है।

पांचों बुराईयों से ग्रसित मनुष्य यह समझ पाने में असमर्थ है कि आज संसार में आसुरी सम्राज्य है। मानवीय मुल्यों का पतन और आसुरी अवगुणों का प्रवाह इसके प्रमाणित उदाहरण है। आज भ्रुण हत्या से लेकर भाई-बहन, माँ-बेटे, पिता-पुत्री के रिश्ते तक कलंकित हो रहे है। इससे घोर रावण राज्य और क्या हो सकता है। रावण का इतना विकराल रूप है कि कोई भी इससे वंचित नहीं है। रावण का इतना व्यापक स्वरूप है कि जल, थल और वायु सब जगह विद्यमान है।

इसकी भेंट में हम सिर्फ अतीत की यादगारों को एक रस्म के रूप में अदायगी कर ले रहे है। विजयादशमी के पर्व पर प्रतिवर्ष रावण का पुतला जलाते तो है। परन्तु हमारे अन्दर रावण दिन-प्रतिदिन बलशाली होता जा रहा है। इसके बढ़ते कद का ही परिणाम है कि हम प्रतिवर्ष रावण का पुतला बड़े बनाते है। लेकिन उसका रहस्य नही समझते है कि जलाने के बाद भी हम बड़ा क्यों बनाकर पुन: जलाते है। रावण को मारने के कई प्रयास तो किये जा रहे है लेकिन यह मरने के बजाए वह बढ़ता जा रहा है। इसे बिना राम को साथ लिये मारना असम्भव है। निराकार राम परमात्मा शिव ने यह स्पष्ट किया है कि रावण कोई देहधारी दस शीष वाला नहीं बल्कि बुराई का प्रतीक है। ये पांचों विकार ही मनुष्य के सच्चे शत्रु है जिससे आज हर घर, परिवार, समाज में तरह-तरह कुरीतयों और अनर्गल कृत्यों को अंजाम दे रहे है। वास्तव में जब आत्मा रूपी सीतायें पांच विकारों से ग्रसित हो जाती है तो उनके अन्दर सुख, शान्ति, पवित्रता का अभाव हो जाता है। आत्मा का असली गुण सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम, पवित्रता है।

आज आसुरी अवगुणों का जनमानस पर इतना प्रभाव है कि स्वार्थ, काम वासना, लोभ, मोह, जातिवाद, हिंसा के चलते मनुष्य संवदेनशून्य हो गया है। आखिर क्या हो गया है मानव को जो बात-बात में सड़कों पर उतर आते है, अपनों के ही दुश्मन बन जाते है, खूनी खेल खेलने लगते है। कहाँ गयी मानवता और करूणा, यह सब रावण का राज्य नहीं तो क्या है। सभी मानव जाति का वह तीसरा नेत्र बन्द कर दिया है। भौतिकता की दौड़ मनुष्य तेजी से उसके तरफ भाग रहा है। यह रावणयुग के अन्त का समय है इसलिए रावण का प्रभाव अति मे जा रहा है। अब आवश्यकता है कि रावण का पुतला जलाने के बजाए अपने अन्दर व्याप्त रावण को परमात्मा की योग अग्नि से जलाये। मैं तो उन सभी लोगों से अनुरोध करता हूँ कि जरा सोंचे इसके बारे में जो थोड़ा भी मानवता की संवेदना से ताल्लुक रखते हैं। जरूरत है आज के सन्दर्भ इसके रहस्य को जानने की। जलाना है तो जलाइये उस अदृष्य रावण को जो पूरी दुनियां में तबाही मचा रखी है। मुंह से बार-बार यही निकलता है कि 'देख तेरे संसार की हालत क्या हुई भगवान, कितना बदल गया संसार। इस दसहरा के पर्व पर एक अवगुणों रूपी रावण को भगाने और जलाने का दृढ़ संकल्प लिजिए और परमात्मा निराकार राम के साथ जुड़कर उसके शक्ति का अधिकारी बनकर सुख-शान्तिपूर्ण दुनियां के अधिकारी बनिये। अपने ज्ञान चक्षु से परमात्मा को पहचाने तथा सर्व अपने वास्तविक पिता परमात्मा से शक्तियां प्राप्त कर अपने सच्चे राज्य के अधिकारी बनें।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com